हिन्दुस्तान
तस्वीर को चाहिए नया नजरिया
www.livehindustan.com

अलग करने के लिए हौसला और जुनून जरूरी

खुद ही पहचान बनाने के लिए कुछ अलग करने का हौसला होना जरूरी है। यही जुनून मुझे एक राजनीतिक परिवार से शिक्षा जगत को लेकर आया। यह कहना है श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट के सचिव आदित्य मूर्ति का जो बरेली जैसे शहर में बच्चों को इंटरनेशनल बिजनेस पढ़ने का अवसर मुहैया करा रहे हैं।

राजनीतिक परिवार से शिक्षा के क्षेत्र में कैसे आना हुआ?

मेरे पिताजी देव मूर्ति ने 1990 में श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट की स्थापना की। उनका उद्देश्य था शिक्षा को बढ़ावा देना। उत्तर प्रदेश में 1992 के बाद से शिक्षा का निजीकरण के बारे में चर्चा शुरू हुई और 1995 में बिल पास हुआ। उस समय प्राथमिक संस्थान थे उसमें से हमको भी उस सूची में रखा गया। हम लोगों ने इंजीनियरिंग कॉलेज की शुरुआत की। जहां तक राजनीतिक परिवार से यू-टर्न कैसे हुआ तो यह मैं कहूंगा यहां भी हम आम लोगों की सेवा ही कर रहे हैं। यह सब नियति का खेल और हम उसके पात्र हैं।

बरेली में आपने पहला इंजीनियरिंग कॉलेज 1996 में खोला। तक से लेकर अब तक क्या बदलाव आया है?

बहुत बड़ा बदलाव आ गया है। बच्चे के पढ़ने, टीचर की गुणवत्ता और सोच में भी बड़ा बदलाव आया है। जब मैं इंजीनियरिंग कॉलेज खोला था तो उत्तर-प्रदेश में तकनीकी शिक्षा निजीकरण के रूप में पहली बार उभरी थी। बच्चे पढ़ने के लिए दक्षिण भारत जाते थे। देखते-देखते बच्चे उत्तर प्रदेश में ही पढ़ने लगे। आज उत्तर प्रदेश के निजी संस्थानों में अच्छी खासी तादाद बच्चों की है।

● आदित्य मूर्ति, सचिव, श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट

आपका शिक्षण संस्थान किस दिशा में और कैसे आगे बढ़ रहा है?

आज की तारीख में किसी भी क्षेत्र में आपको अपनी पहचान बनाने के लिए कुछ अलग करने की आवश्यकता है। श्री राम मूर्ति स्मारक ट्रस्ट के जो भी शिक्षक संस्थान या हेल्थ केयर सेंटर हैं कुछ अलग करने की मुहिम रखते है।

आपने इंटरनेशनल बिजनेस स्कूल शुरू किया है। इसके बारे में जानकारी दें।

हम लोगों ने 2011 में लखनऊ-कानपूर रोड में इंटरनेशनल बिजनेस स्कूल खोला था। इसका कैंपस 17 एकड़ में है। इसका पाठ्यक्रम का डिजाइन अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय को देखते हुए किया गया।

● विस्तृत साक्षात्कार देखने के लिए इस क्यूआर कोड का इस्तेमाल करें।